Dr. Seema Kumari, Asst. Prof (Pol. Sc.), RMC, VKSU.
BA(I), Sub. . Date - 22.06.2021

कानून के स्वरूप

3. ऐतिहासिक विचारधारा - प्रमुख विचारक सर हेनरी मेन, एफ. डब्ल्यू. मेटलैंड और सर फ्रेडरिक पोलक हैं। इस विचारधारा को कानूनी विकासवाद भी कहा जाता है। इनके अनुसार, कानूनी विचारों और संस्थाओं का सार तत्व उनके ऐतिहासिक स्रोतों में ढूंढना चाहिए। ~~सेवाइनी~~ मुख्य प्रतिपादक फ्रेडरिक कार्ल सेवाइनी और हेनरीमेन के अनुसार कानून किसी जन समुदाय की चेतना की अभिव्यक्ति है। इसमें किसी जाति एंव संस्कृति की विशेषताओं की झलक मिलती है। अत: लोगों के रीति रिवाज ही कानून के बुनियादी रूप हैं। विधि निर्माण की प्रक्रिया तो लोक चेतना की अधिनियमों में ढालने का प्रयास मात्र है। ऐतिहासिक न्यायशास्त्र इस मान्यता पर आधारित है कि कानून की विषय वस्तु स्थिर नहीं रहती, जैसे जैसे सामाजिक संस्थाओं के स्वरूप और सामाजिक सजगता के स्तर में परिवर्तन होता है कानून की विषय वस्तु में भी उसी के अनुरूप बदलाव आ जाता है।

4. समाजशास्त्रीय न्यायशास्त्र - प्रमुख प्रतिपादकों में युजेनिख एर्लिख, लियो ड्यूगी, ह्यूगो क्रैब रास्को पाउंड (1870 - 1964), हेराल्ड लास्की हैं। विश्लेषणात्मक न्यायशास्त्र की मान्यताओं के विपरीत इस संप्रदाय का विश्वास है कि राज्य की इच्छा

Scanned with CamScanner

की कानून का सही स्रोत नहीं माना जा सकता। राज्य तो केवल उन नियमों को कानूनी मान्यता प्रदान करने का उपकरण मात्र है जो सामाजिक हितों की देखरेख के लिए समाज में पहले से प्रचलित हैं। अतः कानून न केवल राज्य का पूर्ववर्ती है बल्कि यह उससे उच्चतर भी है। रास्को पाउंड का विचार है कि किसी भी कानून का मूल्यांकन निर्दिष्ट सामाजिक उद्देश्य के संदर्भ में करना चाहिए। सामाजिक प्रगति के लिए यह जरूरी है कि जैसे-जैसे सामाजिक चेतना में परिवर्तन हो उसके अनुरूप कानून की व्याख्या भी बदल देनी चाहिए या स्वयं कानून को ही बदल देना चाहिए। पाउंड के विचार से कानून का उपयुक्त कार्य 'सामाजिक इंजीनियरिंग' है।

5. <u>दार्शनिक न्यायशास्त्र</u> – हीगल, कांट, पाउण्ड मुख्य प्रतिपादक हैं। इनका विशेष संबंध न्याय के विचार का एक नैतिक सिद्धांत के रूप में विकास और एक आदर्श न्याय पद्धति स्थापित करना। कानून के विकास के विचार को आचरणात्मक और नैतिक तत्व के रूप में देखा जाता है।

6. <u>तुलनात्मक विचारधारा</u> – यह अपेक्षाकृत नई विचारधारा है जिसमें विभिन्न देशों की कानूनी पद्धतियों पर विचार करके निष्कर्ष निकाला जाता है। इन विचारधाराओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि कानून की एक उचित धारणा के अंतर्गत हमें यह स्वीकार करना पड़ेगा कि राजनीतिक शासन की सत्ता कानून को वैधानिक मान्यता प्रदान करती है परंतु उसका यथार्थ स्वरूप देश के ऐतिहासिक वातावरण तथा समाज में नैतिकता का परिणाम है।

→

Scanned with CamScanner